यूको

अयोध्या दर्पण

अयोध्या अंचल की छमाही पत्रिका

अप्रैल- सितंबर 2025

यूको बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK

(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

तुम हँसी हो

तुम हँसी हो–जो न मेरे होंठ पर दीखे,
मुझे हर मोड़ पर मिलती रही है।

धूप–मुझ पर जो न छाई हो,
किंतु जिसकी ओर

मेरे रुद्ध जीवन की कुटी की खिड़कियाँ खुलती रही हैं।
तुम दया हो जो मुझे विधि ने न दी हो,

किंतु मुझको दूसरों से बाँधती है
जो कि मेरी ही तरह इंसान हैं।

आँख जिनसे न भी मेरी मिले,
जिनको किंतु मेरी चेतना पहचानती है।

धैर्य हो तुम : जो नहीं प्रतिबिंब मेरे कर्म के धुँधले मुकुर में पा सका,
किंतु जो संघर्ष-रत मेरे प्रतिम का, मनुज का,

अनकहा पर एक धमनी में बहा संदेश मुझ तक ला सका,
व्यक्ति की इकली व्यथा के बीज को

जो लोक-मानस की सुविस्तृत भूमि में पनपा सका।
हँसी ओ उच्छल, दया ओ अनिमेष,

धैर्य ओ अच्युत, आप्त, अशेष।

यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

"हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि
हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।
हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं
उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।
हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।
हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों
एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी
यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का — Honours Your Trust

संपादक मंडल

सरंक्षक
श्रीमती प्रियंका यादव
अंचल प्रमुख

मार्गदर्शन
श्री साहिल सुमन
उप अंचल प्रमुख

विशेष सहयोग
श्रीमती स्वप्निल त्रिवेदी
मुख्य प्रबंधक

सहयोग
श्री अखिलेश गौतम
वरिष्ठ प्रबंधक
श्री प्रणव दीक्षित
प्रबंधक

संपादक
संजीव कुमार
राजभाषा अधिकारी

संपर्क
यूको बैंक , अंचल कार्यालय,
अयोध्या-224001
ई-मेल-zo.ayodhya@uco.bank.in

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

विषय-वस्तु **पृष्ठ सं.**

हमारा विजन, हमारा मिशन	4
माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	5-8
सचिव वित्तीय विभाग जी का संदेश	9
एमडी एवं सीईओ का संदेश	10
अंचल प्रमुख का संदेश	11
उप अंचल प्रमुख का संदेश	12
संपादकीय	13
किताब समीक्षा	14
योग शरीर, मन और आत्मा का समन्वय	15
व्यावसायिक दृष्टि से अयोध्या अंचल	16-19
धारा 3(3) के दस्तावेज	20
बाल कलाकार	21-23
ऊटी की यात्रा	24
हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति	25-26
पापा की घर वापसी	27
हिन्दी पखवाड़ा 2025	28-29
सूर्यास्त मेरे रंगों से	30
अनुपालन	31
राजभाषा संबंधी निर्देश	32
राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान	33-34
कामना	35
हिंदी भाषा का विकास और उसका विश्व में स्थान	36-37
हिंदी दिवस : एक संकल्प या उत्सव?	38
एनपीए और वसूली	39-40
हिन्दी भाषा और तकनीकी उन्नति	41-42

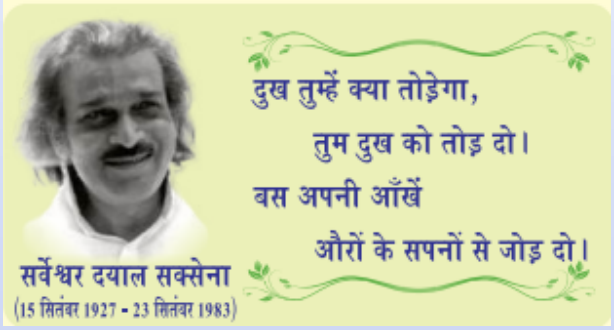

हमारा विजन

एक ऐसी विश्व स्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में सामने आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक, निवेशक बहुत पसंद करते हो एवं जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो |

Our vision

To emerge as the most trusted admired and sought after world class financial institution and to be the most preferred destination for every customer and investor and a place for its employees.

हमारा मिशन

कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर उनकी प्रभावी सहभागिता से एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा कारोबार तथा लाभप्रद प्रथा में स्वतंत्र वृद्धि करते हुए एवं सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कर सामाजिक आर्थिक दायित्वों को पूरा करने हेतु सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक कहलाना |

Our mission

'To be a top class Bank to achieve sustained growth of Business and profitability, fulfilling socio-economic obligations, excellence in customer service; through up gradation of skills of staff and their effective participation and making use of state-of -the art technology'

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

माननीय गृह मंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

एम. नागराजू
सचिव
M. NAGARAJU
SECRETARY

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएँ विभाग
Government of India
Ministry of Finance
Department of Financial Services

संदेश

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

यह सर्वविदित है कि हिन्दी भाषा की व्यापकता के दृष्टिगत इसके प्रसार हेतु भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को 'राजभाषा' का गौरव प्रदान किया था। तभी से, प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भाषा सिर्फ शब्दों का संग्रह ही नहीं होती है, बल्कि यह मानवीय संबंध और विरासत की मौलिकता की संवाहक भी होती है। अत:, उसका संरक्षण व विकास करना हम सबका साझा दायित्व है। हिन्दी को सिर्फ संवाद की भाषा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि यह भारत के आम जनमानस में साहित्य, दर्शन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण व सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता लाने का एक सशक्त माध्यम भी है।

विविधता में एकता, हमारे देश का मूलभूत आधार है, और भाषायी दृष्टि से हिन्दी, देश की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के लिए एक सेतु का काम करती है। हिन्दी के प्रयोग को कार्यालयी कामकाज में बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक प्रोत्साहन योजनाएं प्रारंभ की हैं, और इन्हीं सकारात्मक प्रयासों के चलते हिन्दी का प्रयोग हमारे वित्तीय सेवाएं विभाग एवं इसके अंतर्धीन समस्त कार्यालयों में भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव के इस कालखंड में आवश्यकता इस बात की है कि हमारे कार्यालय हिन्दी के सरलतम रूप को अपनाकर न सिर्फ राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग करके, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा संबंधी मानदंडों के अनुरूप अपेक्षित लक्ष्य को वर्ष-दर-वर्ष पूरा करें, अपितु वित्तीय समावेशन की तरह ही देश में राजभाषा को भी प्रत्येक जनमानस तक पहुंचाएं।

अंत में मैं आप सभी को कालजयी भाषा हिन्दी को समर्पित, इस विशेष दिवस की अनंत शुभकामनाएं देता हूं।

नागराजू

(एम.नागराजू)

जीवन दीप भवन, तृतीय तल, संसद मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ / Jeevan Deep Building, 3rd Floor, Parliament Street, New Delhi-110 001
Phone : +91-11-23340322 / 23343173 E-mail : secy-fs@nic.in Website : www.financialservices.gov.in

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही भाषा** बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

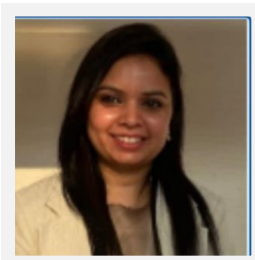

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय यूको जन,

यूको बैंक, अयोध्या अंचल की गृह पत्रिका **"अयोध्या दर्पण"** के नवीन अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। यह अंक न केवल राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किए जा रहे प्रयासों का भी सशक्त परिचायक है। बैंक का काम-काज हिन्दी में करने के साथ-साथ ,जब हम अपने ग्राहकों से हिन्दी में बात करते हैं तो उनको आत्मीयता महसूस होती है और वो ओर अधिक जुड़ा हुआ महसूस करते है तथा हमारी बातों को ध्यान से सुनते हैं जिससे हम उनकी जरूरतों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं |

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है: एनपीए में कमी लाना, रिटेल, कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्र में वृद्धि करना, तथा अधिक से अधिक बचत, चालू एवं सावधि जमा खातों के माध्यम से ग्राहक आधार को सुदृढ़ करना।

हमें बचत व चालू खातों की संख्या बढ़ाने और ऋण वसूली की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु नवीन प्रयास करने होंगे। ग्राहकों से सीधे संवाद स्थापित कर, हम वसूली को गति दे सकते हैं। हमें कारोबार के साथ साथ अनुपालन(Compliance) करने पर भी विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि इसकी महत्ता उच्च है इसलिए कोई शाखा/ कार्यालय अनुपालन में किसी तरह की कोताही न बरतें, इसका सख्त अनुपालन सुनिश्चित करें |

आइए, हम सभी नई ऊर्जा और उत्साह के साथ अपने-अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रतिबद्ध हों। त्वरित और गुणवत्तापूर्ण सेवा ही हमें श्रेष्ठ बैंकिंग परिणाम दिला सकती है।

राजभाषा कार्यान्वयन में हमारा क्षेत्र सदा अग्रणी रहा है यही कारण है कि वित्त वर्ष 2023-24 के लिए नराकास अयोध्या द्वारा हमारे कार्यालय को तृतीय राजभाषा शील्ड पुरस्कार एवं नराकास गोरखपुर द्वारा हमारी गोरखपुर मुख्य शाखा को द्वितीय राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया है। इसके लिए आप सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं!

शुभकामनाओं सहित,

प्रियंका यादव

अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय यूको परिवार,

अंचल कार्यालय अयोध्या की ई-पत्रिका *"अयोध्या दर्पण"* का नवीन अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे बैंकिंग कार्यकलापों की जानकारी देती है, बल्कि हमारे कार्मिकों की साहित्यिक, वैचारिक और रचनात्मक प्रतिभा को भी उजागर करती है।

हमारा विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से अध्ययन की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा और साथ ही राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन मिलेगा। यह मंच हमारे सहयोगियों को अपनी अभिव्यक्ति साझा करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे हम सभी एक-दूसरे के अनुभवों और विचारों से लाभान्वित होते हैं।

साथियों, समय की गति तीव्र है और हमें अपने वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयासरत रहना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सामूहिक परिश्रम और समर्पण से हमारा अंचल बैंक को नई ऊँचाइयों तक हुँचाएगा।

हमारा प्रमुख उद्देश्य ग्राहकों को उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना है। यही सेवा भाव हमारे व्यवसाय को सुदृढ़ करेगा और हिन्दी भाषा का प्रयोग इसमें सेतु का कार्य करेगा। हिन्दी हमारे क्षेत्र की आत्मा है और इसे अपनाना हमारा कर्तव्य भी है।

मुझे प्रसन्नता है कि यह अंक संग्रहणीय होगा और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण योगदान देगा।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य और उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाओं सहित...

साहिल सुमन

उप अंचल प्रमुख

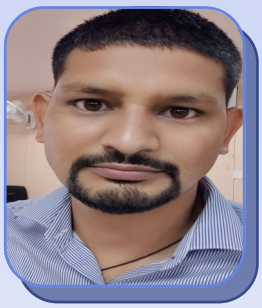

संपादकीय

साथियों,

नमस्कार,

हिन्दी पत्रिका के इस नये संस्करण के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे संस्थान की सृजनशीलता, ज्ञान और विचार-समृद्धि का दर्पण है, बल्कि राजभाषा हिन्दी के संवर्धन और प्रसार का भी एक प्रभावी माध्यम है।

हमारा संविधान हिन्दी को राजभाषा का गौरव प्रदान करता है, और इस नाते यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने प्रशासनिक, अकादमिक तथा दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें। इस दिशा में हिन्दी पत्रिका का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें ऐसा सुदृढ़ मंच उपलब्ध कराती है जहाँ हम अपने विचार, अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों को सहजता से साझा कर सकते हैं।

मैं सम्पादकीय टीम को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह अंक भी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरक तथा उपयोगी सिद्ध होगा। राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रयोग और संरक्षण के लिए हमें निरंतर सामूहिक प्रयास करते रहना चाहिए–यही मेरी शुभकामना है।

हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि किसी भी देश की उन्नति उसकी भाषा की दृढ़ता और व्यापकता से भी निर्धारित होती है। हिन्दी में कार्य करना जहाँ हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता है, वहीं यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सम्मान और आत्मीयता का प्रतीक भी है। इस पत्रिका के माध्यम से हम हिन्दी के साहित्यिक, रचनात्मक और व्यावहारिक पहलुओं को और समृद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी यह यात्रा उत्साह, समर्पण और नवाचार के साथ आगे बढ़ती रहेगी।

आइए, हम सभी हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति, कार्य-संस्कृति और दैनंदिन व्यवहार का अभिन्न अंग बनाकर इसे और अधिक प्रभावशाली बनाने की दिशा में अग्रसर हों।

संजीव कुमार

राजभाषा अधिकारी

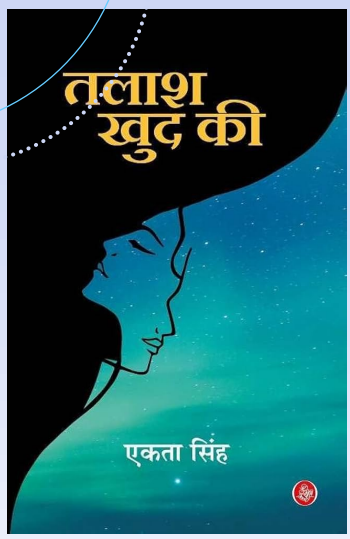

"तलाश ख़ुद की" - एकता सिंह : किताब समीक्षा

एकता सिंह की *"तलाश ख़ुद की"* केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि आत्म-खोज, आत्म-बोध और भीतर छिपी संभावनाओं को समझने की एक गहरी यात्रा है। यह किताब उन पाठकों के लिए बेहद उपयोगी साबित होती है जो जीवन की भागदौड़, भ्रम और असमंजस के बीच अपने असली स्वरूप को पहचानने की कोशिश कर रहे हैं।

लेखन शैली

एकता सिंह की भाषा सरल, सहज और दिल को छूने वाली है। वे कठिन भावनाओं को भी इतने सहज तरीके से बयां करती हैं कि पाठक खुद को हर पन्ने में देख पाता है। लेखन में विचारों की स्पष्टता और भावनाओं की सच्चाई साफ झलकती है।

किताब का मुख्य सार है–

खुद को समझना ही जीवन समझने का पहला कदम है।

- *खुशी बाहर नहीं, भीतर जन्म लेती है।*
- *आत्म-स्वीकार और आत्म-प्रेम ही परिवर्तन का आधार हैं।*

एकता सिंह ने आधुनिक जीवन की उलझनों–मानसिक दबाव, अकेलापन, रिश्तों की दूरी और स्वयं के प्रति उपेक्षा– इन सभी पर बहुत संवेदनशीलता से लिखा है।

क्या खास है इस किताब में?

- हर अध्याय में पाठक को रुककर सोचने पर मजबूर करने वाले विचार
- प्रेरक प्रसंग जो आत्मविश्वास बढ़ाते हैं
- सरल उदाहरण जिनसे जीवन की सच्चाइयाँ स्पष्ट होती हैं
- स्वयं को समझने के लिए छोटे-छोटे अभ्यास

किसके लिए उपयुक्त?

- जिसे जीवन में ठहराव या उलझन महसूस होती है
- जो आत्म-सुधार, मोटिवेशन और माइंडफुलनेस में रुचि रखता है
- युवा, प्रोफेशनल और गृहिणियाँ–हर कोई इससे जुड़ सकता है

निष्कर्ष

"तलाश ख़ुद की" एक ऐसी पुस्तक है जो हर उस व्यक्ति के लिए दर्पण का काम करती है जो अपने मन, विचारों और भावनाओं को समझने की कोशिश कर रहा है। यह किताब न केवल प्रेरित करती है बल्कि हमें अपने साथ एक गहरा संवाद शुरू करना सिखाती है।

सुरुचि चौधरी

प्रबंधक

योग शरीर, मन और आत्मा का समन्वय

योग केवल आसनों का अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक वैज्ञानिक और संतुलित पद्धति है। यह भारत की प्राचीनतम धरोहरों में से एक है, जिसका उद्देश्य मानव शरीर, मन और आत्मा को एकसूत्र में पिरोना है। आधुनिक जीवन की तेज़ गति, तनाव, असंतुलित खान-पान और दिनचर्या के बीच योग आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है।

योग का अर्थ और महत्व

"योग" शब्द संस्कृत के *'युज'* धातु से बना है जिसका अर्थ है–**जोड़ना**, अर्थात शरीर और मन का मेल। योग व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर पर मजबूत बनाता है।

यह केवल बीमारी से बचने का साधन नहीं बल्कि पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करने का मार्ग है।

योग के स्वास्थ्य लाभ

1. शारीरिक लाभ

- शरीर का लचीलापन बढ़ाता है
- मांसपेशियों को मजबूत करता है
- रीढ़ को स्वस्थ रखता है
- पाचन तंत्र को सुधारता है

हार्मोन संतुलन में मदद करता है

2. मानसिक लाभ

- तनाव, चिंता और अवसाद में राहत
- एकाग्रता बढ़ाता है
- नींद की गुणवत्ता सुधारता है

भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है

3. संपूर्ण जीवन शैली पर प्रभाव

योग सकारात्मकता, धैर्य और आत्मविश्वास बढ़ाता है। यह व्यक्ति को बेहतर निर्णय लेने और शांत मानसिकता के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

योग क्यों अपनाएँ?

आज की भागदौड़ वाली जिंदगी में योग जीवन का सहारा बनकर उभरता है। यह न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है बल्कि मन को शांत और आत्मा को उज्ज्वल बनाता है। योग एक ऐसी दवा है जिस पर कोई खर्च नहीं, लेकिन इसके लाभ अमूल्य हैं।

निष्कर्ष

योग अपनाना यानी स्वयं को अपनाना। यह हमें प्रकृति के करीब ले जाता है, शरीर-मन के संतुलन को पुनः स्थापित करता है और जीवन को अधिक सुंदर एवं सार्थक बनाता है। नियमित 10-20 मिनट का योगाभ्यास भी चमत्कारिक परिवर्तन लाता है।

व्यावसायिक दृष्टिकोण से अयोध्या अंचल

01 अप्रैल 2025 से 30 सितंबर 2025 तक

यूको गृह ऋण : शीर्ष 5 शाखाएँ

क्रम	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	संस्वीकृत ऋण की संख्या	संस्वीकृत राशि (लाख रुपये में)
1	मोहददीपुर	1920	6	610.55
2	गोरखपुर मुख्य	0056	11	365.05
3	फैज़ाबाद	0961	8	215.14
4	देवकाली	3560	7	196.61
5	एसवीएम आर्यनगर	1893	8	181

यूको कार ऋण : शीर्ष 5 शाखाएँ

क्रम	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	संस्वीकृत ऋण की संख्या	संस्वीकृत राशि (लाख रुपये में)
1	एसवीएम आर्यनगर	1893	53	519.25
2	नाका	3440	15	499.4
3	गोरखपुर मुख्य	0056	31	346.75
4	बस्ती	3290	25	223.19
5	मोहददीपुर	1920	20	207.7

यूको एमएसएमई ऋण:- शीर्ष पाँच शाखाएँ

क्रम	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	जीएल में वृद्धि
1	नाका	3440	9.34 करोड़
2	बस्ती	3290	9.21 करोड़
3	अयोध्या	1948	7.14 करोड़
4	गोरखपुर	0056	6.25 करोड़
5	कुशीनगर	2862	6.03 करोड़

यूको कृषि ऋण:- शीर्ष पाँच शाखाएँ

क्रम	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	जीएल में वृद्धि
1	गौरीगंज	2943	9.73 करोड़
2	बलरामपुर	2899	5.82 करोड़
3	कुशीनगर	2862	5.40 करोड़
4	उरवा बाजार	550	5.31 करोड़
5	मदरिया	1700	5.07करोड़

व्यावसायिक दृष्टिकोण से अयोध्या अंचल

01 अप्रैल 2025 से 30 सितंबर 2025 तक

एटीएम जारी करने वाली शीर्ष 5 शाखाएँ

क्रम	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	जारी एटीएम की संख्या
1	उर्वा बाजार	0550	1255
2	देवरिया	3171	796
3	कादीपुर	2425	589
4	बलरामपुर	2899	549
5	परमेश्वरपुर	1651	538

एमबैंकिंग जारी करने वाली शीर्ष 5 शाखाएँ

क्रम	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	जारी एमबैंकिंग की संख्या
1	मदरिया	1700	753
2	एसवीएम आर्यनगर	1893	730
3	बहराइच	3088	674
4	देवरिया	3171	659
5	कुशीनगर	2862	611

व्यावसायिक दृष्टिकोण से अयोध्या अंचल

01 अप्रैल 2025 से 30 सितंबर 2025

वसूली करने वाली शीर्ष 5 शाखाएं

1. करहिया बाज़ार
2. गोरखपुर मुख्य
3. बलरामपुर
4. कैम्पिअरगंज
5. अम्बेडकरनगर

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात		
1	सामान्य आदेश	General Orders
2	संकल्प	Resolution
3	परिपत्र	Circulars
4	नियम	Rules
5	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7	संविदाएं	Contracts
8	करार	Agreements
9	अनुज्ञप्तियां	Licenses
10	निविदा प्रारुप	Tender Forms
11	अनुज्ञा पत्र	Permits
12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13	अधिसूचनाएं	Notifications
14	संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

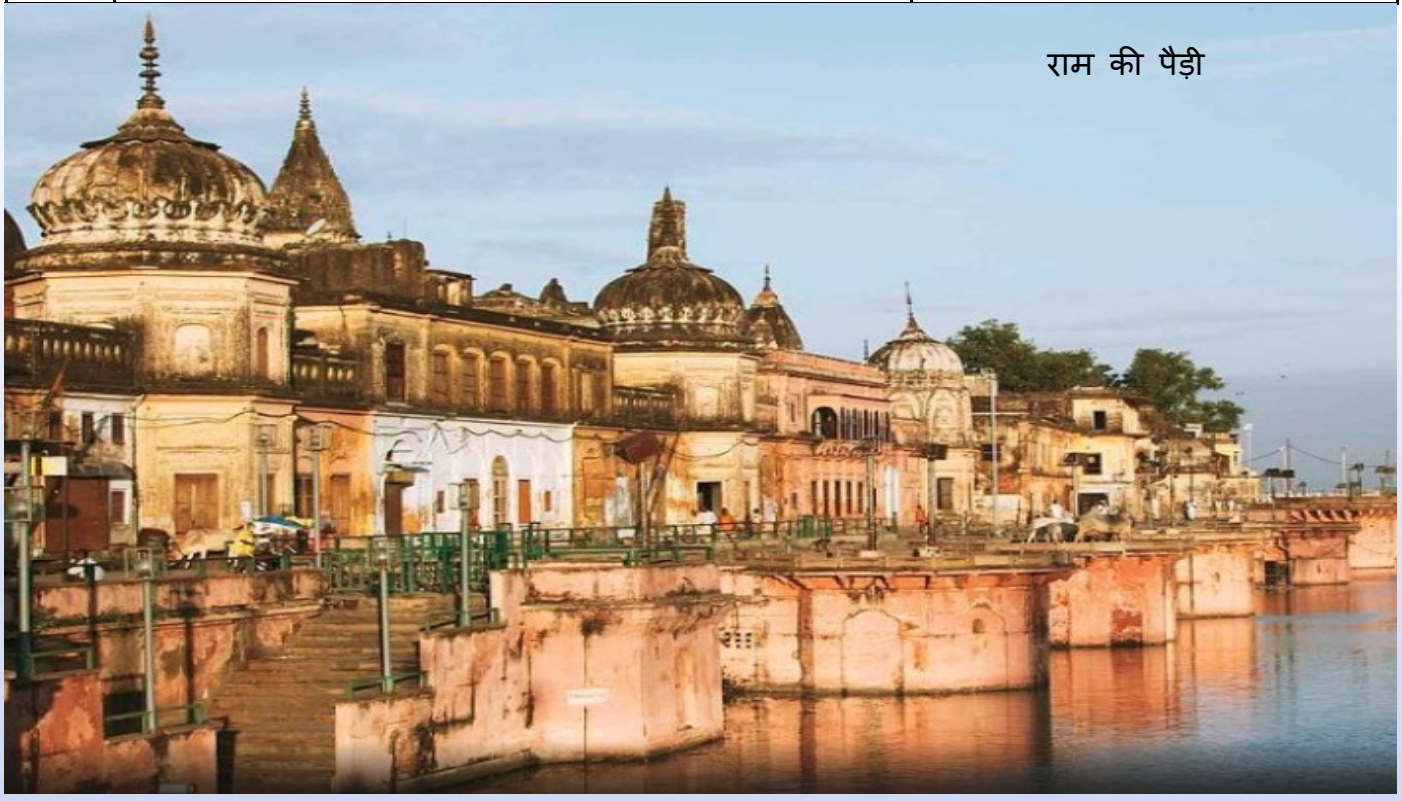

राम की पैड़ी

बाल कलाकार

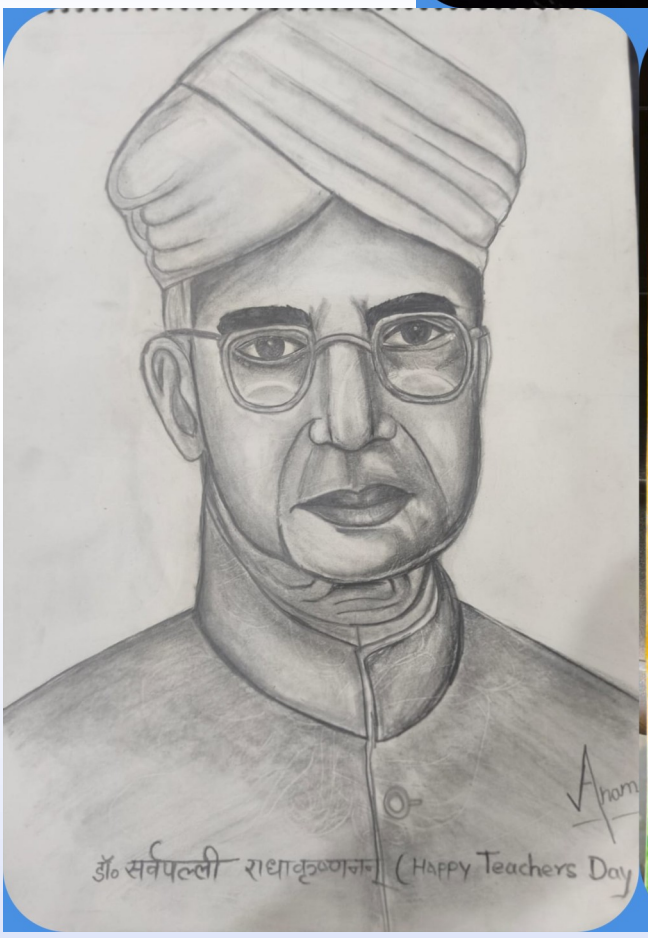

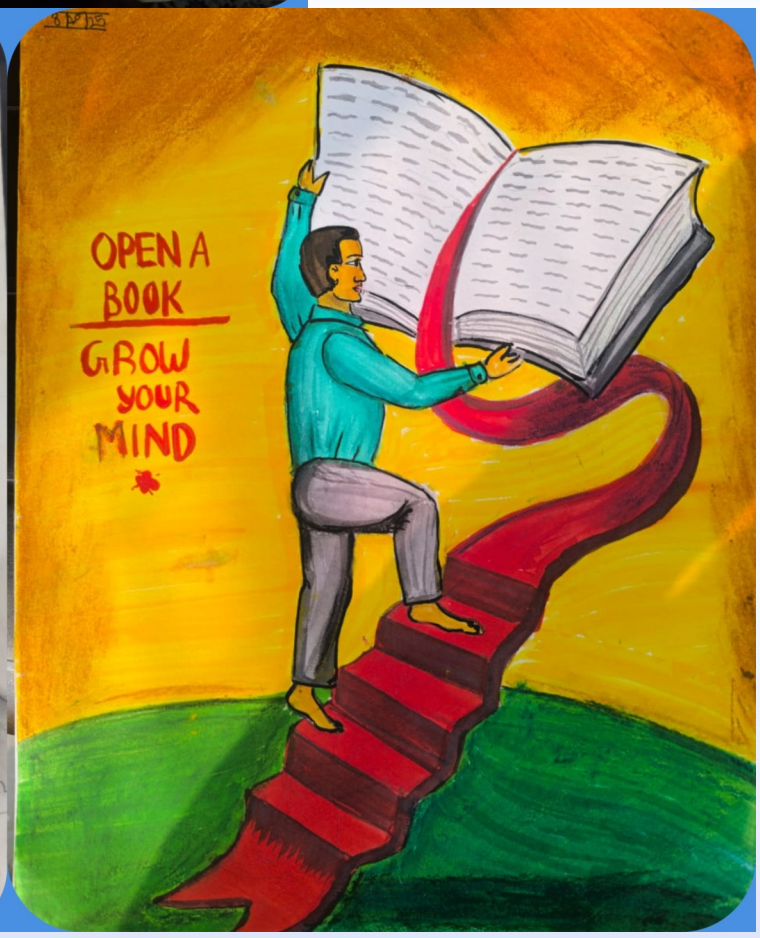

अमन्य श्रीवास्तव पुत्र श्री अभिषेक श्रीवास्तव

कक्षा –5

बाल कलाकार

सानवी सुमन पुत्री साहिल सुमन

4th कक्षा

बाल कलाकार

वर्चस्व जायसवाल पुत्र श्रीमती अर्चना जायसवाल

5th कक्षा

ऊटी की यात्रा

ऊटी पश्चिमी घाट पर बसा एक सुंदर हिल स्टेशन है जिसे पहाड़ों की रानी भी कहा जाता है यह तमिलनाडु के नीलगिरी पर्वत श्रृंखला पर स्थित है | बीती गर्मी की छुट्टियों में, मैं अपने परिवार के साथ वहाँ गया | यह बेहद रोमांचक सफर था क्योंकि यह पहली बार था कि मेरा छोटा भाई जो कि मात्र 2 वर्ष का है वो भी हमारे साथ यात्रा कर रहा था साथ ही यह मेरी पहली हवाई यात्रा भी थी | मैं कानपुर से अपने माता-पिता, दादा-दादी तथा अपने भाई के साथ कैब से लखनऊ के अमौसी हवाई अड्डे पर आया जहां से हमको अपनी बेंगलुरु की हवाई यात्रा शुरू करनी थी, अमौसी हवाई अड्डा बेहद खूबसूरत था | जब हम बेंगलुरु पहुंचे तो रात हो चुकी थी मगर बेंगलुरु हवाई अड्डे की जगमगाती रोशनी देखकर मैं दंग रह गया | माता तथा पिताजी ने किसी अव्यवस्था से बचने हेतु पहले से टैक्सी तथा होटल की बुकिंग कर ली थी हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही टैक्सी हमारा इंतजार कर रही थी | रात होने के कारण हम भोजन करके बेंगलुरु में स्थित एक होटल में रुक गए तथा अगली सुबह सड़क मार्ग द्वारा ऊटी के लिए रवाना हुए रास्ते में जो भी पर्यटन स्थल पड़े हमने उन्हें देखा तथा फोटो खींचे | प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस यात्रा को हमने ऊटी पहुंचकर विराम दिया यहां भी हमारा होटल पहले से बुक था, थोड़ा विश्राम करके हम ऊटी की घूमने गए यहां हमने नौकायान का आनंद लिया | वहाँ स्थित मनोरंजन पार्क में हम दोनों भाई झूला झूले | अब हम सब बेहद थक चुके थे हमने वहां का स्थानीय भोजन किया जैसे कि इडली -डोसा, उत्तपम तथा वडा फिर हम होटल वापस लौट आ गए |

अगली सुबह ऊटी के पास स्थित डोड्डाबेट्टा चोटी को देखने गए जो कि नीलगिरी पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी है, वहां से लौटते हुए हम हमने चाय के बागान देखें, यह अंत्यन्त मनोरम दृश्य था | फिर वहां से एक हम चाय फैक्ट्री गए और अपनी परिजनों के लिए उपहार स्वरूप चाय, कॉफी तथा चॉकलेट ली | मैं और मेरा भाई बेहद उत्साहित थे फिर हम शूटिंग प्वाइंट गए जहां अनेक भारतीय फिल्मों की शूटिंग होती है | हमने वहाँ अनेक फोटो खींचे तथा अपनी यादगार यात्रा को कमरे में कैद कर लिया |

शाम को माता तथा दादीजी ने वहां के प्रसिद्ध मैसूर सिल्क साड़ियों की खरीदारी की | हमने भी वहां की मार्केट से कुछ खिलौने तथा स्मृति चिन्ह लिए | अगली सुबह हम मैसूर घूमते हुए वापस शाम को बेंगलुरु आ गए जहां से हमारी वापसी की यात्रा आरंभ होने वाली थी | हम ऊटी के मनोरम दृश्यों को अपनी यादों में समाहित कर कानपुर वापस आ रहे थे | हम बेहद हर्षित भी थे और यात्रा समाप्त होने से थोड़े हतोत्साहित भी |

यथार्थ मिश्रा पुत्र स्वप्निल त्रिवेदी

6th कक्षा

हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति

भारत एक बहुभाषी और बहुधर्मी देश है, जहाँ विविधता में एकता का अद्भुत स्वरूप देखने को मिलता है। इस विशाल सांस्कृतिक धरोहर में हिंदी भाषा का विशेष स्थान है। हिंदी न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की आत्मा और पहचान भी है। इसकी जड़ें प्राचीन संस्कृत भाषा से जुड़ी हैं, जो विश्व की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है। हिंदी आज विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में गिनी जाती है और करोड़ों भारतीयों के लिए अभिव्यक्ति, साहित्य, कला और परंपराओं का आधार है।

हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी भाषा का विकास भारतीय सभ्यता के विकास के साथ हुआ। यह भाषा सरल, सहज और जनमानस के निकट है। स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी ने देश को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने पर जोर दिया क्योंकि यह भाषा अधिकांश भारतीयों को जोड़ने का सामर्थ्य रखती है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया। तभी से हर वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है।

हिंदी केवल बोलचाल की भाषा नहीं है, बल्कि यह साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर का भी केंद्र है। गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, कबीर, मीराबाई से लेकर प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा तक हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध और जीवंत बनाए रखा है। हिंदी कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक भारतीय समाज की समस्याओं, परंपराओं और भावनाओं का सजीव चित्रण करते हैं।

भारतीय संस्कृति और हिंदी

भारतीय संस्कृति बहुरंगी और बहुपक्षीय है। यहाँ की संस्कृति में धर्म, दर्शन, संगीत, कला, नृत्य, योग, आयुर्वेद और लोक परंपराएँ शामिल हैं। इन सबको जोड़ने में भाषा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी ने विभिन्न प्रांतों और भाषाओं के बीच पुल का कार्य किया है। भारत के अनेक धार्मिक ग्रंथ, भक्ति गीत, दोहे और लोकगीत हिंदी तथा उसकी बोलियों में ही रचे गए, जिन्होंने समाज को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ा।

लोकगीतों, कहावतों और मुहावरों में भारतीय जीवन दर्शन और संस्कार स्पष्ट दिखाई देते हैं। ग्रामीण भारत की परंपराएँ, त्योहार और संस्कार हिंदी भाषा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहे हैं। यही कारण है कि हिंदी न केवल साहित्यिक भाषा है, बल्कि यह भारतीय जीवन शैली और संस्कृति का जीता-जागता दस्तावेज भी है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी

आज globalization के युग में हिंदी भाषा विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। संयुक्त राष्ट्र समेत कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी को मान्यता मिल रही है। विदेशों में बसे भारतीय हिंदी को न केवल संचार का माध्यम बनाए हुए हैं, बल्कि वे इसे अपनी सांस्कृतिक पहचान से भी जोड़कर देखते हैं। अमेरिका, इंग्लैंड, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, कनाडा और खाड़ी देशों में हिंदी साहित्य और कला का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है। इस प्रकार हिंदी भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

चुनौतियाँ और समाधान

आधुनिक समय में अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव बढ़ने से हिंदी के सामने चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं। शहरी क्षेत्रों में लोग हिंदी बोलने से झिझकते हैं और इसे कमतर मानते हैं। शिक्षा और रोजगार में अंग्रेज़ी के वर्चस्व ने हिंदी को पीछे धकेलने का

प्रयास किया है। किंतु यह भी सत्य है कि हिंदी में रोजगार, साहित्य, मीडिया, सिनेमा और डिजिटल मंचों पर अपार संभावनाएँ हैं।

जरूरी है कि हम हिंदी को गर्व और सम्मान के साथ अपनाएँ। स्कूलों और कॉलेजों में हिंदी शिक्षण को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाए। हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए। डिजिटल युग में हिंदी कंटेंट निर्माण को प्रोत्साहित करना समय की माँग है।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का संबंध अविभाज्य है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक धरोहर की वाहक और राष्ट्र की एकता का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि हिंदी भाषा के माध्यम से ही व्यापक रूप में प्रकट होती है। आज आवश्यकता है कि हम हिंदी को केवल संचार की भाषा न मानकर इसे अपनी पहचान और संस्कृति की आत्मा के रूप में समझें। हिंदी का सम्मान करना, दरअसल भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सम्मान करना है।

आकाश श्रीवास्तव

प्रबंधक

पापा की घर वापसी

हमें हुआ उन क्षणों का एहसास,
त्योहारों पर लगाए एक आस,
कि होते आप हमारे पास,
हो जाते वो पल और भी खास।

इस बात से हम थे स्वीकार,
व्यापक है आपका कार्यभार,
देशसेवा में संसार,
और हम सबसे खूब प्यार।

संग होगी अपनी हर होली,
प्यार भरी हर एक दिवाली।
अंत हुई जीविका सिपाही वाली,
घर पर होगी नई प्रणाली।

सीखेंगे अब फौज का अनुशासन,
ठोस कदम, मज़बूत प्रशासन।
स्नेह उनका और डांट ज़रा सी,
हुई पापा की घर वापसी।

अनुराग शुक्ला

ग्राहक सेवा सहायक

सतनपुरा शाखा

हिंदी पखवाड़ा 2025 का आयोजन

पखवाड़े के अंतर्गत अंचल कार्यालय में स्टाफ सदस्यों के लिए कुल 4 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया | विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करते हुए कर्मचारियों के छाया चित्र |

पुरस्कार वितरण समारोह

हिंदी पखवाड़ा 2025 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को अंचल प्रमुख सुश्री प्रियंका यादव द्वारा प्रशस्ति पत्र तथा पुस्तक देकर सम्मानित किया गया |

सूर्यास्त का मनोरम दृश्य

सुरुचि चौधरी

प्रबंधक

अनुपालन(Compliance)

बैंकिंग क्षेत्र किसी भी देश की आर्थिक रीढ़ होता है। बैंक न केवल वित्तीय लेन-देन का केंद्र होते हैं, बल्कि जनता के विश्वास और सुरक्षा का प्रतीक भी हैं। इस विश्वास को बनाए रखने के लिए **अनुपालन (Compliance)** अत्यंत आवश्यक है। अनुपालन का अर्थ है–कानून, नियम, विनियम, और नियामक संस्थाओं द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों का पालन करना।

अनुपालन का महत्व:

- **ग्राहक सुरक्षा**: अनुपालन से ग्राहकों की जमा राशि और व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षित रहती है।
- **कानूनी दायित्व**: बैंक यदि नियमों का पालन नहीं करते तो उन पर जुर्माना, दंड या लाइसेंस रद्द होने जैसी कार्रवाई हो सकती है।
- **विश्वसनीयता**: नियमों का पालन करने वाला बैंक जनता और निवेशकों का विश्वास अर्जित करता है।
- **धन शोधन रोकथाम**: अनुपालन से मनी लॉन्ड्रिंग, आतंकवादी वित्तपोषण और धोखाधड़ी जैसी गतिविधियों पर रोक लगती है।

अनुपालन के प्रमुख क्षेत्र:

केवाईसी (Know Your Customer) – ग्राहक की पहचान और पृष्ठभूमि की जांच।
एएमएल (Anti-Money Laundering) – संदिग्ध लेन-देन की निगरानी और रिपोर्टिंग।
आरबीआई दिशा-निर्देश - भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी नियमों का पालन।
डेटा सुरक्षा - डिजिटल बैंकिंग में साइबर सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना।
आंतरिक नीतियाँ - बैंक के भीतर आचार संहिता, जोखिम प्रबंधन और ऑडिट प्रणाली।

अनुपालन की चुनौतियाँ

- लगातार बदलते नियमों के साथ तालमेल बैठाना।
- तकनीकी विकास के कारण नए प्रकार के जोखिम।
- कर्मचारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण देना।
- वैश्विक स्तर पर अलग-अलग देशों के नियमों का पालन करना।

निष्कर्ष

बैंकिंग में अनुपालन केवल कानूनी आवश्यकता नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। यह ग्राहकों के विश्वास को मजबूत करता है और वित्तीय प्रणाली को स्थिर बनाए रखता है। यदि बैंक अनुपालन को अपनी संस्कृति का हिस्सा बना लें, तो वे न केवल सुरक्षित रहेंगे बल्कि देश की आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

प्रणव दीक्षित

प्रबंधक

शाखाओं हेतु राजभाषा सम्बन्धी विशेष ध्यान देने योग्य बातें

- अगर शाखा की राजभाषा फाइल नहीं है तो अविलंब बना लें और अगर पहले से बनी हुई है तो उसे अद्यतन स्थिति में रखें | अद्यतन स्थिति का अर्थ है- राजभाषा से संबंधित आने जाने वालों पत्रों की प्रतियां, शाखा की हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट की कार्यालय प्रति, तिमाही राजभाषा बैठक की कार्य प्रति तथा अन्य पत्रों दस्तावेजों, परिपत्रों को नियमित रूप से इसमें रखते जाना |
- शाखाओं के निरीक्षण में यह पाया गया है कि राजभाषा फाइल में पिछले कई सालों का कोई रिकॉर्ड मौजूद नहीं है इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है राजभाषा फाइल का रिकॉर्ड रखना अति आवश्यक है |
- वित्तीय वर्ष की प्रत्येक तिमाही की हिंदी प्रगति रिपोर्ट भरकर अगले माह (यानि अप्रैल-जून की जुलाई में, जुलाई-सितंबर की अक्टूबर में, अक्टूबर-दिसंबर की जनवरी में, जनवरी-मार्च की अप्रैल) के प्रथम सप्ताह में अपने नियंत्रक कार्यालय को अवश्य भेज दें और इस रिपोर्ट की कार्यालय प्रति पर प्रेषण क्रमांक और दिनांक दर्ज कर राजभाषा फाइल में फाइलिंग कर दें |
- शाखा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में अनिवार्य रूप से आयोजित करें और उसका कार्यवृत(मिनट्स) अपने नियंत्रक कार्यालय को तिमाही प्रगति रिपोर्ट के साथ ही भेज दें | बैठक के रजिस्टर पर भी मिनट्स भेजने का प्रेषण क्रमांक और दिनांक अवश्य अंकित करें |
- यह ध्यान दें की शाखा कि समस्त मुहरें द्विभाषी में है और कोई भी मुहर सिर्फ अंग्रेजी में नही बनी हुई है | ग्राहकों से संबंधित सभी प्रकार के प्रोफार्मा, फार्मेट आदि हिंदी / द्विभाषी में उपलब्ध है न कि सिर्फ अंग्रेजी में |
- शाखा के स्टाफ सदस्यों के नामपट्ट, पद्धारिता(designation) बोर्ड, सूचनाएं, शाखा की होर्डिंग आदि द्विभाषी में बने हुए हैं |
- व्यक्तिश: आदेश के प्रारूप के अनुसार स्टाफ सदस्यों को आदेश जारी करें एवं पावती लेकर राजभाषा फाइल में संलग्न करें | साथ ही संलग्न स्टाफ रोस्टर के प्रारूप पर स्टाफ की बांछित सूचनाएं भरकर राजभाषा फाइल में रखें |
- शाखा की समस्त फाइलों, रजिस्टरों पर कवर शीर्षक द्विभाषी में लिखे जायें न कि सिर्फ अंग्रेजी में और रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ, वाउचर आदि भरने में हिंदी का प्रयोग किया जाए |
- शाखा के सभी कम्प्यूटरों पर हिंदी में टाइप करने के लिए फोनेटिक कीबोर्ड (जैसे कि माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लंग्वेज इनपुट टूल) इंस्टाल है और हिंदी पत्राचार में उसका प्रयोग किया जाता है |
- यह भी ध्यान दें कि 'क' क्षेत्र में शाखा के स्थित होने के कारण अंग्रेजी पत्रों के उत्तर भी हिंदी में ही दिए जाएँ |
- हिंदी और अंग्रेजी के पत्रों से संबंधित आवक-जावक (Inward-Outward) पत्रों के रिकॉर्ड आवक-जावक पंजिका में नियमित रूप से अद्यतन करें |

राजभाषा हिंदी से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

अनुच्छेद 343 - 351 में राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रावधान वर्णित हैं जो निम्नांकित हैं :-

अनुच्छेद 343

343 (1) -इस अनुच्छेद में कहा गया है कि भारत संघ की भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी. संघ के सरकारी कार्यों में भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूपों का प्रयोग होगा.

343(2)- इसमें कहा गया है कि संविधान लागू होने के 15 सालों तक यानी 26 जनवरी 1950 से 26 जनवरी 1965 तक अंग्रेजी भाषा सरकारी कार्यो में पहले की तरह इस्तेमाल होती रहेगी.

अनुच्छेद 344

इस अनुच्छेद में राजभाषा आयोग के गठन की बात कही गई है इसमें कहा गया है कि संविधान के प्रारंभ से 5 और 10 वर्षों के खत्म होने पर देश के राष्ट्रपति हिन्दी के विकास और प्रयोग का जायजा लेने के लिए आयोग का गठन करेंगे | आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए 30 सदस्यों की संसदीय समिति गठित की जाएगी | इसमें लोकसभा के 20 और राज्यसभा के 10 सदस्य होंगे, समिति रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपेगी |

अनुच्छेद-345

इस अनुच्छेद में राज्यों की राजभाषाओं का जिक्र है, इसमें कहा गया है कि राज्यों के विधान मंडल अपने राज्य में सरकारी प्रयोजन के स्थानीय भाषा/भाषाओं या हिन्दी को अपनाएंगे | जब तक कानून द्वारा कोई प्रबंध नहीं किया जाता राज्य में अंग्रेजी पहले की तरह सरकारी कामों में प्रयोग होती रहेगी |

अनुच्छेद 346

इस अनुच्छेद में केंद्र और राज्यों के बीच संचार की भाषा को लेकर बात कही गई है, इसमें कहा गया है कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए उस समय जो भाषा मौजूद रहेगी वही भाषा राज्य और संघ के बीच संपर्क भाषा रहेगी, यदि दो या अधिक राज्य आपसी सहमति से पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करना चाहें तो कर सकते हैं |

अनुच्छेद 347

इसमें राज्यों में दूसरी राजभाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि अगर किसी राज्य का जनसमुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा को शासकीय मान्यता प्रदान करने की मांग की जाती है तो राष्ट्रपति उस भाषा को राज्य के सभी या कुछ कामों के लिए मान्यता देने के आदेश दे सकते हैं |

अनुच्छेद 348

यह अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण है. इसमें उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय और अधिनियमों की भाषा को लेकर बात कही गई है, इसमें कहा गया है कि जब तक कोई व्यवस्था न की जाए तब तक हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी में होगी | केंद्र और राज्यों के सभी विधेयक, अधिनियम, आदेश आदि का पाठ अंग्रेजी में होगा |

अनुच्छेद-349

संविधान में प्रारंभ से 15 साल तक के दौरान हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा में करने के लिए कोई संशोधन लोकसभा/राज्यसभा में राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से ही लाया जाएगा |

अनुच्छेद-350

अनुच्छेद-350 कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी परेशानियों के लिए संघ या राज्य के किसी भी अधिकारी को उस समय इस्तेमाल होने वाली राजभाषा में आवेदन दे सकता है.

इसके अलावा अनुच्छेद-350 (क) में कहा गया है कि भाषायी अल्पसंख्यकों के लिए प्राथमिक स्तर में मातृ भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की जाए |

अनुच्छेद-351

संविधान के इस अनुच्छेद में हिन्दी के विकास के लिए कुछ निर्देशों का जिक्र है, इसमें कहा गया है कि हिन्दी भाषा के प्रचार ,विकास की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की होगी |

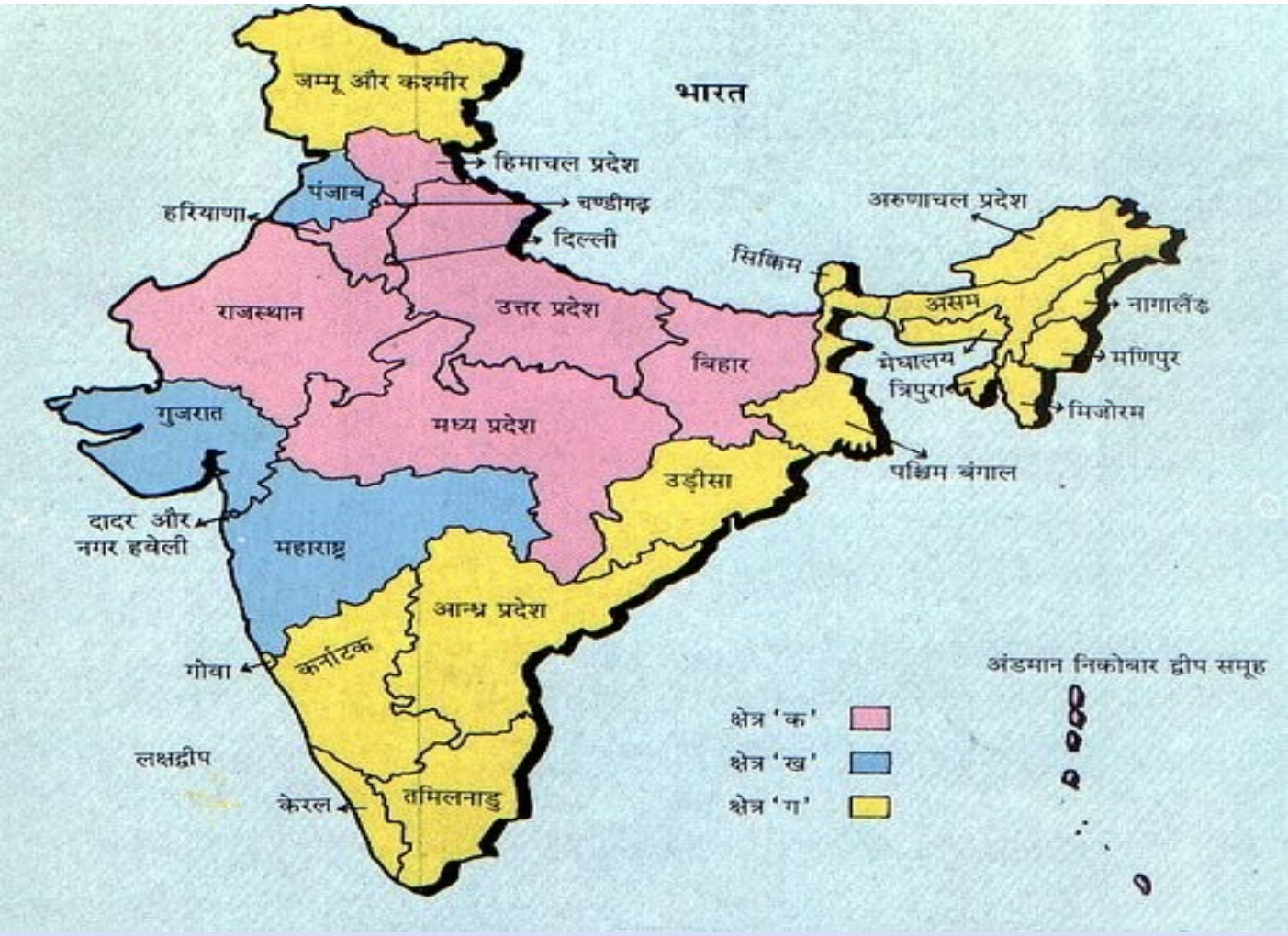

कामना

पृथक है कामना से मन ,
तो जीत है न हार है,
जो कामना हैं कर रहे ,
ये मात्र एक विचार है..

है कामना अलग अलग,
ना भाव है ना सार है,
कुवृत्तियों में लिप्त होना,
मन का ही विकार है..

है कामना जो आज को,
बदल रही है कल को वो,
रुकी नहीं क्षणमात्र को ,
बदलना ही स्वभाव है ..

है कामना की पूर्ति ही,
प्रसन्नता का भाव है,
ना पूरी हो जो कामना,
वो वेदना है , घाव है..

ना पूर्ण थी, ना हो सकी,
अपूर्णता का भाव है,
यही वजह है कामना ,
हो नर में तो अभाव है ..

है कामना जीवों में वो,
आनन्द पर प्रहार है,
हो कामना का जब दमन,
आनन्द फिर अपार है.....

अर्पिता गोंड
सहायक प्रबंधक
परमेश्वरपुर शाखा

हिंदी भाषा का विकास और उसका विश्व में स्थान

हिंदी हमारी आत्मा है, हिंदी हमारी पहचान है।"

भाषा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता और अस्तित्व का आधार होती है। विविधताओं से भरी भूमि भारत में हिंदी भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि जनमानस की भावनाओं और विचारों को प्रकट करने का माध्यम भी है। हिंदी का उद्भव, विकास और वर्तमान स्वरूप एक लम्बी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है। आज यह भाषा विश्व पटल पर भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रही है। हिंदी की जड़े संस्कृत भाषा में निहित हैं। संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से आधुनिक हिंदी का जन्म हुआ। इसे समझाने के लिए एक श्लोक उपयुक्त है-

"संस्कृतस्य जननी सर्वभाषाणां मता | सा एव विकसिताभ्यां प्राकृतापभ्रंशयोः।"

अर्थात् संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है, और प्राकृत व अपभ्रंश के माध्यम से हिंदी ने अपना रूप ग्रहण किया।

भारत की प्रगति में हिंदी भाषा का बहुत योगदान है। भारत की आजादी की लडाई में भी जब कलम से लड़ाई लिखी गई थी तो हिन्दी ही हथियार बनी थी। जब कर्तव्यों और देशभक्ति जगाने के लिए भाषणों और पंक्तियों से लोगों को जगाया तब भी हिंदी ही माध्यम थी। हिंदी साहित्य ने भारत की आत्मा को शब्द दिए हैं। महान संत कबीर जी के दोहे -

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ॥"

अर्थात् सच के समान कोई तपस्या नहीं है, झूठ के समान कोई पाप नहीं है। जिनके हृदय में सच बस जाता है वहां स्वतः ही हरि अर्थात भगवान का वास हो जाता है। यह दोहा हमें व समाज को सत्य और ईमानदारी की राह दिखा दिखता है। ऐसे ही अनेकों दोहे, पक्तियां समाज में आज भी नेकी का पाठ पढ़ाने के उन्नत उदाहरण है। साथ ही तुलसीदास की रामचरितमानस ने हिंदी को धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का आधार बनाया। वहीं, महान कवि एवं उपन्यासक प्रेमचंद जी के उपन्यासों ने समाज में सुधार और यथार्थ का बोध कराया। इस प्रकार हिंदी ने साहित्य के हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है जो उल्लेखनीय है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया और तभी से हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। यहाँ यह संस्कृत श्लोक सार्थक होता है -

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

अर्थात् मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का महत्व किसी भी राष्ट्र के लिए स्वर्ग से भी महान होता है।

आज हिंदी केवल साहित्य तक सीमित नहीं है। विज्ञान, तकनीक, राजनीति, शिक्षा, सिनेमा, पत्रकारिता, रेडियो, टेलीविज़न और सोशल मीडिया- हर क्षेत्र में हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है। हिंदी फ़िल्म उद्योग (बॉलीवुड) में हिंदी को वैश्विक मंच

तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभाई है। डिजिटल युग में इंटरनेट पर हिंदी की सामग्री लगातार बढ़ रही है। गूगल और यूट्यूब पर हिंदी विश्व की तीसरी सबसे लोकप्रिय भाषा बन चुकी है। यह दर्शाता है कि हिंदी आधुनिक युग में भी प्रासंगिक और प्रभावशाली है। हिंदी अब केवल भारत की भाषा नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुकी है। अनेक देशों में प्रवासी भारतीय समुदाय के कारण हिंदी का व्यापक प्रचलन है। विश्व की लगभग 60 करोड़ से अधिक जनता हिंदी समझती या बोलती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का हिन्दी के विकास में योगदान बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी हिन्दी भाषा को पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने कई बार संयुक्त राष्ट्र महासभा और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी में भाषण देकर यह संदेश दिया कि हिन्दी एक वैश्विक भाषा बनने की क्षमता रखती है। मोदी जी का लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रसारित होता है जो हिन्दी को जनसंचार की भाषा के रूप में स्थापित करता है। उनके भाषणों ने न केवल भारतीयों का गौरव बढ़ाया बल्कि दुनिया को हिन्दी की सामर्थ्य से अवगत कराया है। मोदी जी द्वारा सभी डिजिटल पोर्टलों व ऐप पर हिन्दी भाषा की उपलब्धता ने भारतवासियों के लिए डिजिटलीकरण की राह को सुगम बनाया है। मोदी जी ने अपने नेतृत्व में अनेकों बार यह बताया है कि हिन्दी हमारी पहचान और स्वाभिमान की भाषा है। हिन्दी केवल भारत की राजभाषा नहीं, बल्कि भारतीयता का प्रतीक बनकर उभरी है। यहाँ महात्मा गांधी का कथन स्मरणीय है-

हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में सम्पूर्ण भारत को जोड़ सकती है।"

अंग्रेजी के अत्यधिक प्रभाव और भारतीय समाज में भाषाई विविधताओं के कारण हिंदी को कुछ चुनौतियों का सामना करना पहता है। अंग्रेजी की व्यापकता और समृद्ध दिखने की होड़ में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग, हिन्दी के अस्तित्व को चुनौती देता है। फिर भी, हिंदी की सरलता, समृद्ध शब्दावली और लोकव्याप्ति इसे निरंतर आगे बढ़ा रही है। एक प्रसिद्ध उक्ति है- "हिंदी की शक्ति उसकी आत्मीयता और सहजता में है। यही कारण है कि विश्वभर में हिंदी को अपनाने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसका विकास हजारों वर्षों की यात्रा का परिणाम है और आज यह विश्व पटल पर मजबूती से खड़ी है। आने वाले समय में हिंदी निश्चित ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक बनेगी और विश्व स्तर पर और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाएगी। तुलसीदास जी की यह पक्ति इस संदर्भ में उपयुक्त-

"जय जय सुरनायक जन सुखदायक, भारत भवानी भारती।"

अर्थात् भारत की माँ भारती और उसकी भाषा हिंदी सदैव गौरव का विषय रहेगी। अंत में मैं स्वरचित चंद पक्तियों से अपने विचारों को विराम देना चाहूंगी।

हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं, हिन्दी हमारी शान है।
बात करने का माध्यम संग, हिन्दी हमारी पहचान है।
हिन्दी भारत मां की बिंदी, हर बच्चे का यह गान है।
हिन्दी भारत का गौरव है, हिन्दी से हिंदुस्तान है।"

जय हिंद, जय हिन्दी, जय हिंदुस्तान।।

मान्या अग्रवाल
सहायक प्रबंधक
फैजाबाद शाखा

हिंदी दिवस : एक संकल्प या उत्सव?

प्रस्तावना

हिंदी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को पूरे भारत में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसी दिन 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। यह दिन हमें अपनी भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति जागरूक करता है। प्रश्न यह है कि हिंदी दिवस केवल एक उत्सव है या फिर एक गंभीर संकल्प?

हिंदी का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की भावनाओं की अभिव्यक्ति है। यह हमारी संस्कृति, परंपरा और साहित्य की संवाहक है। हिंदी साहित्य ने समाज को दिशा देने का कार्य किया है। संतों, कवियों और लेखकों ने हिंदी के माध्यम से समाज में जागरूकता और नैतिक मूल्यों का प्रसार किया। हिंदी ने भारत की विविधता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है।

उत्सव के रूप में हिंदी दिवस

हिंदी दिवस के अवसर पर विद्यालयों, महाविद्यालयों और सरकारी कार्यालयों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं–भाषण, वाद-विवाद, निबंध लेखन, कविता पाठ आदि। इन आयोजनों के माध्यम से हिंदी के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त किया जाता है। यह दिन एक सांस्कृतिक उत्सव की तरह मनाया जाता है, जहाँ भाषा के गौरव का गुणगान किया जाता है।

संकल्प के रूप में हिंदी दिवस

किन्तु यदि हिंदी का प्रयोग केवल एक दिन तक सीमित रह जाए, तो इसका उद्देश्य अधूरा रह जाता है। हिंदी दिवस का वास्तविक अर्थ है–हिंदी के व्यापक और प्रभावी प्रयोग का संकल्प लेना। हमें यह प्रण करना चाहिए कि हम दैनिक जीवन, शिक्षा, प्रशासन और तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी को बढ़ावा देंगे। अपनी मातृभाषा का सम्मान करना और उसे व्यवहार में लाना ही सच्ची राष्ट्रभक्ति है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी

आज हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। इंटरनेट, सिनेमा और मीडिया के माध्यम से हिंदी का प्रसार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हो रहा है। आवश्यकता है कि हम हिंदी को आधुनिक विज्ञान और तकनीक की भाषा बनाने का प्रयास करें, ताकि यह वैश्विक मंच पर और अधिक सशक्त होकर उभरे।

आकाश कुमार सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक

एनपीए और वसूली

भारतीय बैंकिंग व्यवस्था देश की आर्थिक रीढ़ है। बैंक न केवल बचत और निवेश का माध्यम हैं, बल्कि उद्योग, व्यापार और कृषि को वित्तीय सहयोग भी प्रदान करते हैं। परंतु जब ऋण समय पर वापस नहीं लौटता, तब यह बैंकिंग प्रणाली के लिए गंभीर चुनौती बन जाता है। इस स्थिति को **अनर्जक परिसंपत्ति (Non-Performing Asset – NPA)** कहा जाता है। वसूली और एनपीए आज भारतीय बैंकिंग जगत के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक हैं।

एनपीए की परिभाषा

एनपीए वह ऋण है, जिसकी मूल राशि या ब्याज 90 दिनों से अधिक समय तक बकाया रहता है।

- यदि उधारकर्ता समय पर किस्तें नहीं चुकाता,
- ब्याज का भुगतान नहीं करता,

या ऋण खाते में कोई लेन-देन नहीं होता, तो वह खाता एनपीए घोषित कर दिया जाता है।

एनपीए को तीन श्रेणियों में बाँटा जाता है:

1. **सब-स्टैंडर्ड एसेट** - 12 महीने तक एनपीए रहने वाले खाते।
2. **डाउटफुल एसेट** - 12 महीने से अधिक समय तक एनपीए रहने वाले खाते।

लॉस एसेट - ऐसे खाते जिनमें वसूली की संभावना लगभग समाप्त हो जाती है।

एनपीए के कारण

एनपीए बनने के पीछे कई कारण हैं:

- **आर्थिक मंदी** - उद्योगों की आय घटने से ऋण चुकाना कठिन हो जाता है।
- **प्राकृतिक आपदाएँ** - कृषि ऋण में बाढ़, सूखा या अन्य आपदाएँ।
- **प्रबंधन की कमजोरी** - कंपनियों का गलत निवेश या भ्रष्टाचार।
- **अत्यधिक ऋण वितरण** - बिना उचित जांच के ऋण देना।
- **कानूनी प्रक्रिया की जटिलता** - वसूली में लंबा समय लगना।

एनपीए का प्रभाव

एनपीए बैंकिंग व्यवस्था और अर्थव्यवस्था दोनों पर गहरा असर डालते हैं:

- बैंकों की **लाभप्रदता घटती है**।
- नए ऋण देने की क्षमता कम हो जाती है।
- निवेशकों और जमाकर्ताओं का **विश्वास कमजोर होता है**।

देश की **आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित होती है**।

वसूली की चुनौतियाँ

एनपीए की वसूली आसान नहीं होती।

- उधारकर्ता अक्सर कानूनी रास्ते अपनाते हैं।
- संपत्ति की कीमत गिरने से वसूली में नुकसान होता है।

न्यायालयों में लंबी प्रक्रिया के कारण समय और संसाधन खर्च होते हैं।

- **1. ऋण वसूली न्यायाधिकरण (Debt Recovery Tribunal - DRT)**
  - बैंकों को त्वरित वसूली का अधिकार।
  - विशेष न्यायालयों के माध्यम से ऋण की वसूली।
  - **SARFAESI अधिनियम (2002)**
  - बैंकों को अधिकार कि वे बिना अदालत की अनुमति के गिरवी रखी संपत्ति को जब्त कर बेच सकें।
  - **इन्सॉल्वेंसी और दिवालियापन संहिता (IBC - 2016)**
  - कंपनियों के दिवालियापन की स्थिति में त्वरित समाधान।
  - 180 दिनों में प्रक्रिया पूरी करने का लक्ष्य।
  - **ऋण पुनर्गठन (Debt Restructuring)**
  - उधारकर्ता को नई शर्तों पर ऋण चुकाने का अवसर।
  - **बैंकों का विलय और सुदृढ़ीकरण**
- बड़े और मजबूत बैंक एनपीए से बेहतर तरीके से निपट सकते हैं।
- **एनपीए नियंत्रण के लिए सुझाव**
- ऋण वितरण से पहले **कड़ी जांच-पड़ताल**।
- तकनीकी और वित्तीय व्यवहार्यता का सही आकलन।
- डिजिटल निगरानी और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग।
- कृषि और छोटे उद्योगों के लिए विशेष सहायता योजनाएँ।
- समय पर वसूली के लिए **सख्त अनुशासन**।
- **निष्कर्ष**
- एनपीए भारतीय बैंकिंग व्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौती है। वसूली की प्रक्रिया को तेज और पारदर्शी बनाना आवश्यक है। सरकार, बैंक और न्यायपालिका को मिलकर ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जिससे ऋण समय पर वापस आए और बैंकिंग प्रणाली मजबूत बने।
- एनपीए पर नियंत्रण केवल बैंकों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह पूरे आर्थिक तंत्र की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि वसूली की प्रक्रिया प्रभावी हो और ऋण वितरण में पारदर्शिता हो, तो भारतीय बैंकिंग व्यवस्था और अर्थव्यवस्था दोनों सुदृढ़ होंगी।

कमल वर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक

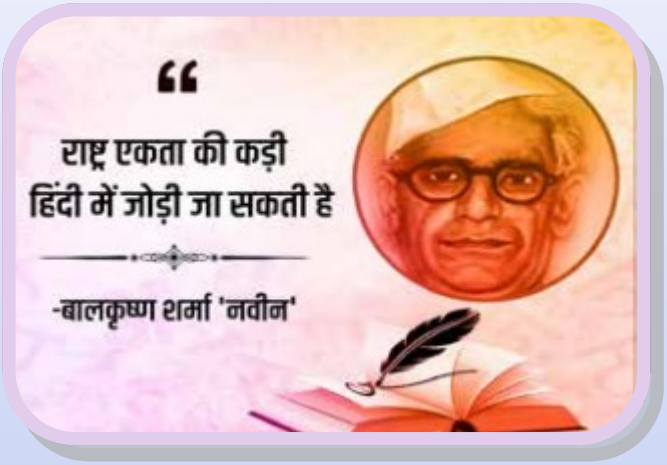

हिन्दी भाषा और तकनीकी उन्नति

पिछले दो दशकों में हिंदी भाषा और तकनीकी प्रगति के बीच संबंध में जबरदस्त बदलाव आया है। एक समय पर तकनीक के लिए बाधा मानी जाने वाली हिंदी ,आज भारत में डिजिटल समावेशन और नवाचार को आगे बढ़ाने वाली एक प्रमुख शक्ति बन गई है। किसी भी राष्ट्र के विकास में तकनीकी उन्नति एक इंजन का काम करती है, और इस उन्नति को जन-जन तक पहुँचाने का काम उस देश की भाषा करती है। पहले जहाँ हिन्दी को तकनीकी प्रगति में एक बाधा माना जाता था ,वहीं आज यह स्वयं तकनीकी नवाचारों का केंद्र बन गई है। यह सहजीवी संबंध न केवल तकनीकी को समावेशी बना रहा है ,बल्कि हिन्दी को भी एक आधुनिक और डिजिटल भाषा के रूप में स्थापित कर रहा है।

तकनीकी उन्नति में हिन्दी की आवश्यकता और भूमिका

डिजिटल समावेशन : भारत की लगभग आधी आबादी (विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में) के लिए स्मार्टफोन ,इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का उपयोग तभी आसान हो सकता है जब वे हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हों।

ई-गवर्नेंस और ई-कॉमर्स : सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराने और ऑनलाइन खरीदारी को सफल बनाने के लिए हिन्दी आवश्यक है। सरकारी पोर्टल ,बैंकिंग ऐप्स ,और खरीददारी वेबसाइट्स का हिन्दी में उपलब्ध होना उपयोगकर्ताओं का विश्वास बढ़ाता है।

ज्ञान का लोकतंत्रीकरण : शिक्षा ,स्वास्थ्य ,कृषि और विज्ञान से संबंधित जटिल जानकारियों को हिन्दी में उपलब्ध कराने से दूरदराज के लोग भी नई तकनीकों और वैज्ञानिक सफलताओं से सीधे जुड़ पाते हैं।

हिन्दी और तकनीकी नवाचार के प्रमुख क्षेत्र

1. यूनिकोड और टाइपिंग तकनीक

यूनिकोड का मानकीकरण : इसने हिन्दी को कंप्यूटर और मोबाइल उपकरणों पर विश्वव्यापी पहचान दी।

सरल इनपुट उपकरण : वर्चुअल कीबोर्ड ,इनस्क्रिप्ट और ट्रांसलिटरेशन टूल्स ने हिन्दी में टाइप करना आसान बना दिया।

2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता) AI) और मशीन लर्निंग

वॉइस असिस्टेंट : गूगल असिस्टेंट और एलेक्सा जैसे उपकरणों में हिन्दी का उपयोग तेजी से बढ़ा है।

मशीन ट्रांसलेशन : हिन्दी से अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद अधिक सटीक हुआ है।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) : हिन्दी वाक्यों को समझने वाले चैटबॉट्स और ग्राहक सेवाएँ विकसित हो रही हैं।

3. डिजिटल मीडिया और सामग्री निर्माण

सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग : फेसबुक ,ट्विटर (X), इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर हिन्दी सामग्री का प्रभुत्व बढ़ रहा है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म : नेटफ्लिक्स और अमेज़न प्राइम पर हिन्दी फिल्में और वेब सीरीज वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो रही हैं।

भविष्य की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

चुनौतियाँ

तकनीकी शब्दावली का अभाव

उच्चारण और क्षेत्रीय विविधता

संभावनाएँ

एजुकेशन टेक्नोलॉजी (EdTech) : हिन्दी में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम शिक्षा को घर-घर तक पहुँचा सकते हैं।

फिनटेक (FinTech) : वित्तीय सेवाओं को हिन्दी में सरल बनाकर वित्तीय समावेशन को गति दी जा सकती है।

कोडिंग में हिन्दी : यदि प्रोग्रामिंग अवधारणाएँ हिन्दी में पढ़ाई जाएँ तो बड़ी संख्या में युवा तकनीकी नवाचार में भाग ले सकेंगे।

निष्कर्ष

हिन्दी भाषा और तकनीकी प्रगति के बीच की साझेदारी भारत के भविष्य को आकार देने वाली एक शक्तिशाली ताकत है। हिन्दी भाषा तकनीकी उन्नति की गति को मंद नहीं करती ,बल्कि उसे गति प्रदान करती है। आज हिन्दी केवल साहित्य की भाषा नहीं ,बल्कि कंप्यूटर ,इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भाषा बन गई है। यह तकनीकी उन्नति का भारतीयकरण कर रही है ,जिससे विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। हिन्दी भाषी समाज और तकनीकी जगत के बीच यह बढ़ता समन्वय भारत को एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था बनाने और वैश्विक तकनीकी मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

पीयूष चंद्र शाह

प्रबंधक

हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है
राष्ट्र और जाति की उन्नति।
-महात्मा गांधी

भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं
और हिंदी महानदी।
-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है
तो उसका माध्यम हिंदी में ही हो सकता है।
- सुब्रह्मण्यम भारती

सबको हिंदी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा
भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।
-चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

राम दरबार अयोध्या